ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(3): 360-374
www.allresearchjournal.com
Received: 11-01-2022
Accepted: 13-02-2022

सुरेन्द्र सिंह
शोधार्थी, भूगोल विभाग, कुमांऊँ विश्वविद्यालय, पी0 जी0 कालेज, बागेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत

डी0 एस0 परिहार
भूतपूर्व शोधार्थी, भूगोल विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, एस0 एस0 जे0 परिसर, अल्मोंड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author:
सुरेन्द्र सिंह
शोधार्थी, भूगोल विभाग, कुमांऊँ विश्वविद्यालय, पी0 जी0 कालेज, बागेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत

तहसील बागेश्वर में पर्यटन की समस्यायें और सम्भावनायें: सुदूर संवेदन एवं जी0आई0एस0 के माध्यम से

सुरेन्द्र सिंह, डी0 एस0 परिहार

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2022.v8.i3e.9589

सारांश
वर्तमान समय पर्यटन विश्व में अति शीघ्रगामी उद्योगों में से एक है। किसी समय में यह क्रिया जो एक विलासित मानी जाती थी। अब विकासशील देशों में भी प्रचुरतर लोगों को आकर्षित कर रही है। एक सामाजिक-सांस्कृतिक संवृत्ति होने के अतिरिक्त, यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है। पर्यटन के दृष्टिकोण से उत्तराखण्ड राज्य भारत का एक बहुमुखी पर्यटन स्थल है। प्रस्तुत अध्ययन के लिये जनपद बागेश्वर के तहसील बागेश्वर में पर्यटन व पर्यटन की समस्यायें और सम्भावनाओं का अध्ययन को चुना गया है जिसको पूर्ण करने हेतु सुदूर संवेदन एवं जी0आई0एस0 के माध्यम का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य जी0पी0एस0, सुदूर संवेदन एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली के माध्यम से तहसील बागेश्वर में पर्यटन के उत्पादों का विस्तृत अध्ययन करना तथा पर्यटन की प्रमुख समस्यायें एवं समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना है। अध्ययन की सुविधा के लिये 6 भागों में बॉटा गया है जिसके अंतर्गत प्राकृतिक दृश्य आधारित पर्यटन, साहसिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन एवं पर्यटकों के लिये आवास गृह/होटल की सुविधायें प्रमुख है जिनका विस्तारपूर्वक अध्ययन अग्र प्रस्तुत किया गया है।

कूटशब्दः पर्यटन, हिमालयी तहसील, सुदूर संवेदन, जी0आई0एस0, सम्भावनायें।

प्रस्तावना:
उत्तराखण्ड में पर्यटन की संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुये United Nation World Turism Organization (UNWTO) द्वारा उत्तराखण्ड राज्य का Turism Master Plan तैयार किया कराया गया था जिसमें वर्ष 2007–2022 तक अल्पावधि, मध्यावधि एवं दीर्घकालिन पर्यटन विकास के सम्बंध में विस्तृत रूपरेखा दी गई है। विभिन्न वर्षों में देशी–विदेशी पर्यटकों का आवागमन भी बढ़ा है। तथा राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में भी पर्यटन उद्योग से सम्बन्धित होटल, रेस्टोरेन्ट आदि सैक्टर में वर्षवार योगदान कुल जी0एस0डी0पी0 का 3–4 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय औसत से लगभग तीन गुना है। इससे स्पष्ट होता है कि उत्तराखण्ड राज्य में यदि पर्यटन की व्यापक संभावनायें विशेषकर ग्रामीण पर्यटन (Rural turism), पर्यावरण आधारित पर्यटन (Eco turism), तीर्थाटन से सम्बन्धित पर्यटन व्यवस्था को मास्टर प्लान के अनुरूप लागू किया जाय तो राज्य की आर्थिकी में पर्यटन के योगदान को प्रभावी रूप से बढ़ाया जा सकता है। ऐसा ही एक अनुमान उत्तराखण्ड के बागेश्वर जिले में भी कहा जा सकता है। यह जनपद बेहद खूबसूरत छठाओं को अपने में समाया हुये लिये है। यहॉ पर अनेक पर्यटन के कार्य किये जाते हैं। अवकाश उद्वेश्यों के लिये यात्रा करना बहुत कम लोगों के लिये आरक्षित अनुभव से विकसित होकर अब ऐसे अनुभव में बदल गया है जिसका आनंद अनेक लोग लेते हैं। ऐतिहासिक रूप से, यात्रा करने की क्षमता राजसी और उच्च वर्गों के लिये आरक्षित थी। प्राचीन रोमन काल से लेकर 17वीं शताब्दी तक, उच्च वर्गों के युवाओं को सम्पूर्ण यूरोप का *''ग्रॅड टूर''* करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता था। मध्य युग में अनेक समाजों ने धार्मिक तीर्थ यात्रा (भारत के इतिहास में अब तक का सबसे लोकप्रिय रूप) के प्रचलन को प्रोत्साहित किया। रेल यात्रा की निरन्तर बढ़ती लोकप्रियता और ऑटोमोबाइल के विकास ने पर्यटन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 1952 में लंदन, इंग्लैण्ड से जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका और कोलम्बों, श्रीलंका तक प्रथम वाणिज्यिक हवाई उड़ानों और जेट युग के आने से पर्यटन में अत्यधिक तीव्रता आई। अनेक लोग इसे आधुनिक पर्यटन उद्योग की शुरूआत मानते हैं।

अनेक देशों की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में इसका योगदान प्रायः कृषि-जन्य तथा औद्योगिक क्षेत्रों की अपेक्षा भी कहीं अधिक है (तिवारी, 2005)। प्राणनाथ सेन के अनुसार ''पर्यटन एक ऐसी आनन्दपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने स्थान विशेष से मुद्रा अर्जित करता है और उस अर्जित मुद्रा का

उपयोग किसी स्थान विशेष की यात्रा के लिये व्यय करता है।'' पर्यटन मुख्यतः अर्थशास्त्र से संम्बन्धित है जो एक उद्योग का द्योतक है तथा यह एक आर्थिक क्रिया भी है जो अन्य आर्थिक क्रियाओं की तरह इससे मांग की उत्पति होती है तथा अन्य उद्योगों के लिये बाजार प्रदान करता है। पर्यटन एक मूल एवं बहुत ही ऐच्छिक क्रिया है। जो समस्त जनता एवं सरकारों की प्रशंसा एवं प्रोत्साहन करने योग्य है। यह एक उद्योग है जो लोगों को उनके आगमन पर नियत स्थान की तरफ आकर्षित करने, वहाँ तक पहुँचाने, आवासित करने, आहार प्रदान करने, मनो-विनोद करने तथा उनकी वापसी पर उन्हें घरों तक पहुँचाने से संम्बन्धित है। पर्यटन को दो मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किया गया है स्थिर क्षेत्र एवं अस्थिर क्षेत्र। स्थिर के अन्तर्गत वे समस्त आर्थिक क्रियायें हैं जो कि समुदाय के निर्माण, मांग को आकर्षित करने एवं परिवहन चालकों, यात्रा अभिकर्ताओं, परिवहन संस्थाओं व अन्य सहायक सेवा की क्रियायें भी सम्मिलित है। अस्थिर क्षेत्र के अन्तर्गत अल्प-कालीन प्रवास, आवास सुविधा, खान-पान की माँग आादि क्रियायें शामिल की जाती हैं। एक सीमित अर्थ में पर्यटन को एक उद्योग नहीं कहा सकता है परन्तु आर्थिक दृष्टि से पर्यटन से ही मांग की उत्पति होती है तथा यह विभिन्न उद्योगों के लिये बाजार प्रदान करता है।

किसी एक राष्ट्र के विकास में पर्यटन न केवल महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है साथ ही विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। राष्ट्र के आर्थिक क्षेत्र में महत्व, विदेशी मुद्रा अर्जित करने में योगदान एवं रोजगार के विभिन्न स्रोत उपलब्ध करने में पर्यटन का अपना एक अद्वितीय स्थान रहा है (त्रिपाठी, 2008)। साहित्य के अवलोकन से यह ज्ञात हुआ है कि पर्यटन ऐसी घटना व सम्बन्धों का मिश्रण है जो किसी स्थान पर अनिवासियों की यात्रा और उसके वहाँ ठहरने से उत्पन्न होता है तथा इसके अंर्तगत व्यक्ति उन स्थानों पर न तो स्थाई रूप से बसता है और न धन कमाने के लिये कोई कार्य करता है। (त्रिपाठी, 2008)

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सुदूर संवेदन एवं जी0आई0एस0 के माध्यम से हिमालयी तहसील बागेश्वर में पर्यटन व सम्भावनाओं का अध्ययन करना है। अध्ययन को पूर्ण करने हेतु निम्न बिन्दुओं को आधार माना गया है–

1. जनपद बागेश्वर के तहसील बागेश्वर में पर्यटन के उत्पादों का विस्तृत अध्ययन।
2. जी0पी0एस0, सुदूर संवेदन एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली के माध्यम से तहसील बागेश्वर में समस्त पर्यटन उत्पादों का मानचित्रण करना।
3. पर्यटन की प्रमुख समस्यायें एवं समाधान हेतू सुझाव प्रस्तुत करना।

विधितंत्र

इस अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतू शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षणात्मक तथा विश्लेषणात्मक दोनों विधियों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा जनपद बागेश्वर के तहसील बागेश्वर में पर्यटन के अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकडों का संग्रह शोधार्थी द्वारा स्वयं क्षेत्र के भ्रमण के दौरान लोगों से मिलकर व फोटोग्राफी के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक ऑकडों को प्राप्त करने के लिये तथा इस शोधकार्य को पूरा करने के लिये जनपद बागेश्वर कार्यालय, विकास खण्ड कार्यालय, पर्यटन विभाग, पत्रिकायें, विभिन्न पुस्तकों व समाचार पत्रों की सहायता ली गई है। जी0पी0एस0, क्वानटम जी०आई०एस०, एम०एस० पेन्ट, एम०एस० ऑफिस एवं एम०एस० एक्सेल का प्रयोग मानचित्र, आकृति, फोटो तथा भौगोलिक सूचना लेने के लिये किया गया है। धार्मिक पर्यटन के अलावा जनपद प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान करने के लिये कुछ पर्यटकों को भी आकर्षित करता है। टूरिस्ट बोर्ड के अनुसार, वर्ष 2019–20 तक 85 होटल एवं 99 होमस्टे स्थापित किये गये हैं।

अध्ययन क्षेत्र का स्थिति विस्तार

तहसील बागेश्वर, 11वें हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड के जिला बागेश्वर में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 493 वर्ग किलोमीटर है। यह उत्तराखण्ड राज्य के बागेश्वर जनपद में 29°42 '0" N अक्षांश से 29°54'0" N अक्षांश तक तथा देशांन्तरीय स्थिति 79°39'30" E से 80°1'20" E तक भैगोलिक रुप से स्थिति है जिसे मानचित्र–1 में प्रदर्शित किया गया है। समुद्र तल से इसकी औसत ऊँचाई 960 मीटर है। बागेश्वर नगर सरयू तथा गोमती नदियों के संगम पर स्थित है। इसके पश्चिम में नीलेश्वर पर्वत, पूर्व में भीलेश्वर पर्वत, उत्तर में सूर्यकुण्ड तथा दक्षिण में अग्निकुण्ड स्थित है। इसके पूर्व में काण्डा और पिथौरागढ़ जनपद की गंगोलीहाट की तहसील, पश्चिम में गरूड़ तहसील, उत्तर में कपकोट तहसील तथा दक्षिण में अल्मोड़ा जनपद की सदर तहसील है। बागेश्वर जनपद का स्थान तीन नदियों सरयु, गोमती और भागीरथी के संगम पर है। यह क्षेत्र एक पवित्र भूमि के रूप में माना जाता है इसलिये इस क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन लोकप्रिय है। तहसील के अधिकार क्षेत्र में कुल 376 गॉव आते हैं और 2021 सांख्यकी विभाग जनपद बागेश्वर की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 1,97,399 तथा कुल परिवारों की संख्या 52,519 है जिसमें 95,691 कुल पुरूष जनसंख्या व 101708 कुल महिला जनसंख्या है। छः वर्ष से नीचे आयु वाले बच्चों की कुल संख्या 25489 है। बागेश्वर तहसील में वर्ष का औसत तापमान 20.4° सेल्सियस है। 27.3° सेल्सियस के औसत तापमान के साथ जून साल का सबसे गर्म महीना होता है। 11° सेल्सियस के औसत तापमान के साथ जनवरी साल में सबसे ठंडा महीना होता है। साल भर में वर्षा की औसत मात्रा 1221.7 मिमी0 है। सरयू नदी बागेश्वर जिले के उत्तरी भाग में स्थित नंदा कोट पर्वत के पास सरमूल नामक स्थान से निकलती है। शुरूआत में लगभग 50 किलोमीटर तक यह दक्षिण–पश्चिम दिशा में बहती है और इसमें पुंगर और लाहुर नदियॉ गिरती हैं। फिर यह नदी दक्षिण की ओर मुडकर बागेश्वर नगर से होकर बहती है जहॉ इसका संगम गोमती से होता है। मानचित्र–2 में बागेश्वर तहसील के अपवाह तंत्र को तथा छायाचित्र–1 में बागेश्वर नगर के समीप सरयु नदी को प्रस्तुत किया गया है। इस नदी का स्रोत सरमूल है और अंतिम बिन्दु पंचेश्वर है। स्थानीय बोली में, सरयु नदी को 'सरजू' कहा जाता है। इस नदी के तट पर भुनी, सुपर और खाती प्रसिद्व घाट है। सरयु नदी दक्षिण–पश्चिम दिशा में बहती है और तल्ला दानपुर क्षेत्र में यह 'कनाल गाढ़' से मिलती है। कुछ दूरी को तय करने के बाद, 'पनार गाढ़' नामक एक धारा भी इसमें शामिल हो जाती है। और बागेश्वर में, यह गोमती नदी से मिलती है। इन दोनो नदियों के संगम के पास प्राचीन बागनाथ मंदिर स्थित है। बागेश्वर शहर को पार करने बाद भद्रादीगढ़, चौगरखा–की–घाट गाढ़, जालौरगढ़, भूरगढ़, अलकनंदी, सानियागढ़ और पनार नदी जैसी छोटी सहायक नदीयॉ सरयु नदी में मिलती हैं।

तहसील बागेश्वर में पर्यटन

तहसील में 2012 में 77205 भारतीय तथा 940 विदेशी, 2013 में 63740 भारतीय 792 विदेशी, 2014 में 75398 भारतीय 824 विदेशी, 2015 में 76267 भारतीय 673 विदेशी, 2016 में 76807 भारतीय 353 विदेशी, 2017 में 78026 भारतीय 376 विदेशी, 2018 में 87217 भारतीय 1024 विदेशी, 2019 में 104841 भारतीय, 519 विदेशी, 2020 में भारतीय 10841 विदेशी 4 पर्यटक यहॉ पर पर्यटन के लिये आये। जिसे निम्न तालिका–1 व आकृति–1 में दर्शाया गया है।

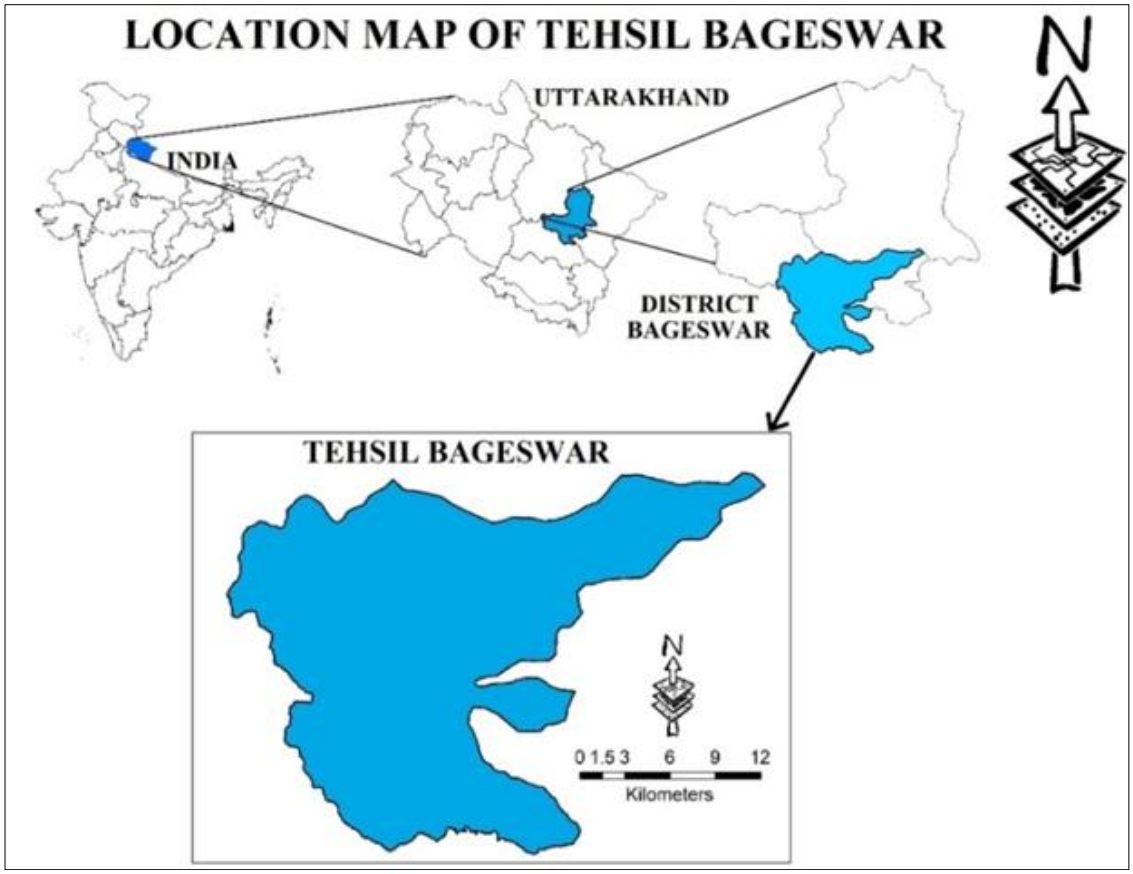

मानचित्र–1: बागेश्वर तहसील की अवस्थिति

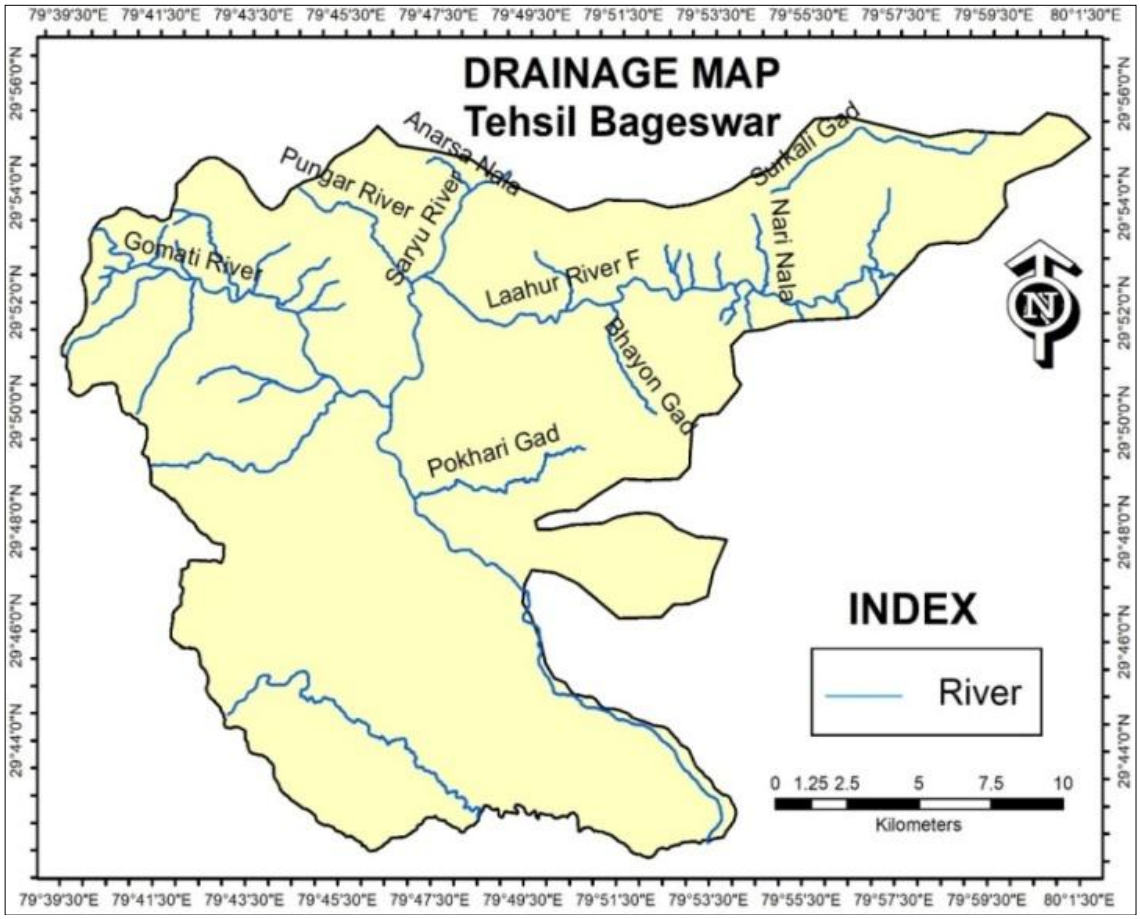

मानचित्र 2: सरयू नदी का अपवाह तंत्र (क्षेत्र भ्रमण के आधार पर)।

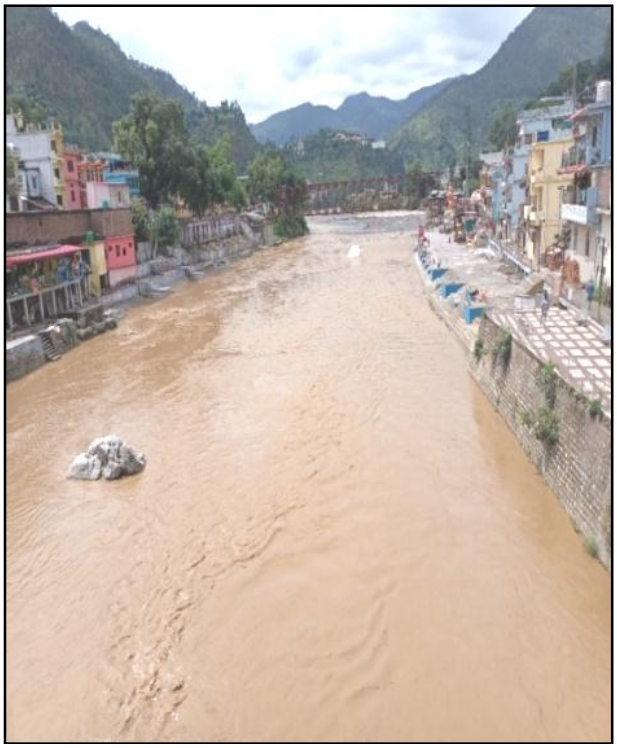

छायाचित्र 1: सरयू नदी बागेश्वर नगर के समीप

तलिका 1: तहसील बागेश्वर में देशी व विदेशी पर्यटकों का आगमन वर्ष 2012 से 2021 तक (स्रोतः पर्यटन विभाग, बागेश्वर)।

क्र0स0	वर्ष	भारतीय	विदेशी	योग	क्र0स0	वर्ष	भारतीय	विदेशी	योग
1	2012	77205	940	78145	6	2017	78026	376	78402
2	2013	63740	792	64532	7	2018	87217	1024	88241
3	2014	75398	824	76222	8	2019	104841	519	105360
4	2015	76267	673	76940	9	2020	10841	04	10845
5	2016	76807	353	76160	10	2021	26450	01	26451

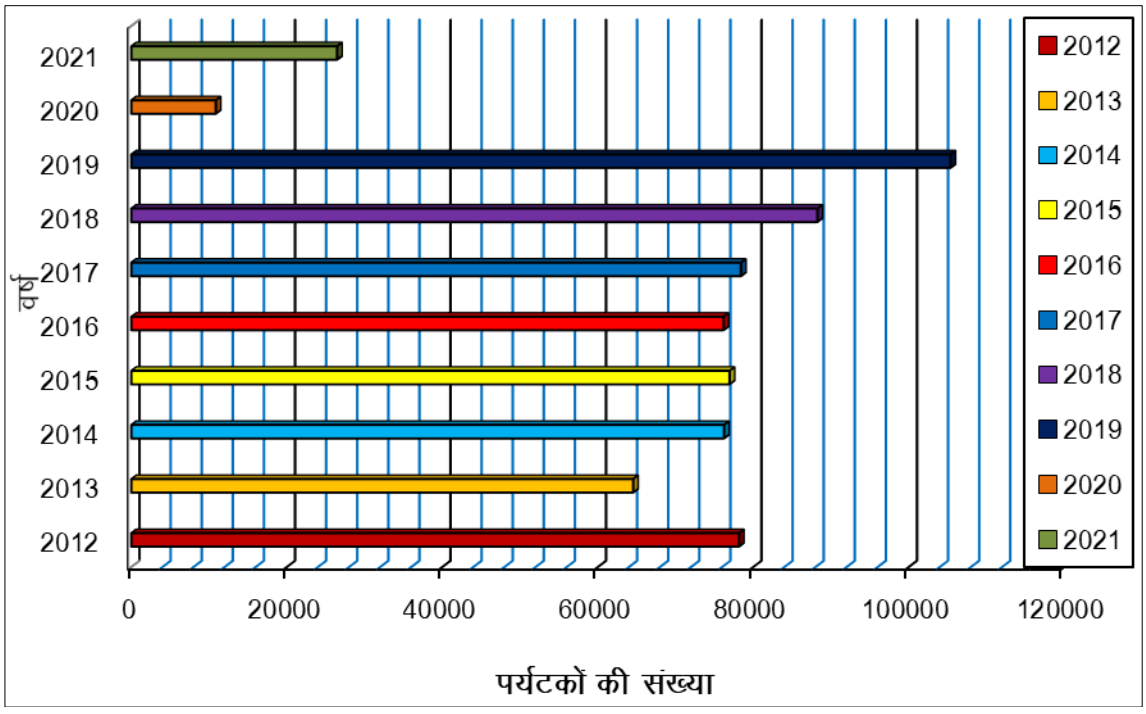

आकृति 1: तहसील बागेश्वर में वर्ष 2012 से 2021 तक पर्यटकों का आगमन *(स्रोतः पर्यटन विभाग, बागेश्वर)।*

प्रमुख पर्यटन स्थल

बागेश्वर अंचल अपनी नैसर्गिक सुन्दरता के लिये विख्यात है। इस अंचल में जहॉ आकाश को छूने वाली हिमालय की उच्च चोटियॉ हैं, वहॉ छोटी–छोटी और हरी–भरी अनेक पर्वत श्रृखलायें भी हैं– जो प्रत्येक प्रकृति–प्रेमी को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहती हैं। यही कारण है कि इस अंचल में प्रति वर्ष हजारों

पर्यटक, सैलानी, पर्वतारोही और प्रकृति–प्रेमी देश–विदेश से आते रहते हैं। कुमांऊॅ की धरती बागेश्वर रसीली है यहॉ हरे–भरे बॉज–बुरॉश के वनों में नाना प्रकार के पशु–पक्षी स्वछंद विचरण करते रहते हैं, नदियों का कल–कल स्वर जहॉ सैलानियों को कर्णाप्रिय लगता है, वहीं पक्षियों का कलरव उन्हें मादकता प्रदान करता है तथा नाना प्रकार के फूल यहॉ खिलते हैं व दूर–दूर तक घाटियों में पकी फसलों का सौन्दर्य अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है। (नौटियाल, 2005)।

पर्वतों की चोटियों से झरने झलकते हुये झरते हैं। मखमली धरती के इन्हीं अंचलों में सुन्दर तालों की शोभा पर्यटकों को सुख देने के लिये तैयार रहती है। फलों की डालियों झुक–झुक कर आने वालों को न्यौता देती हुई–सी लगती हैं, मानों कह रही हों– आप इधर आयें, हमारा नमस्कार लिजिये और हमारा रसस्वादन किजिये। मधुर–मधुर स्मृतियों को संजोने वाला है– ''कुमांऊॅ का बागेश्वर अंचल''। बागेश्वर में प्रमुख पर्यटन स्थल निम्नलिखित हैं– पिंडारी और सुन्दरढूंगा ग्लेश्यिर, मैकतोली, बागनाथ मंदिर, बैजनाथ मंदिर, चंडिका मंदिर, कौसानी, पांडुस्थल, बिगुल, विजयपुर, उखल्सू झरना, गौरी उडियार, भद्रकाली मंदिर, जोगाबाड़ी गुफा, रूद्रधारा झरना, भगवती मंदिर (कांडा), मॉ भगवती (पोथिंग), मॉ भगवती (बदियाकोट), कुकुड़ा माई मंदिर, जैकुनी संभू बुग्याल, बैजनाथ झील, तप्त कुण्ड (सलिंग), सुकुण्डा ताल (पोथिंग), व्यास गुफा भनार, झेलम झरना (गोगिना), छीड़ गंगा, कुण्ड कफौली, टुकोरी डाना, लघु उडियार, शिखर भनार मंदिर, कोट भ्रामरी मंदिर। मानचित्र–3 में तहसील बागेश्वर का पर्यटन मानचित्र को प्रदशित किया गया है।

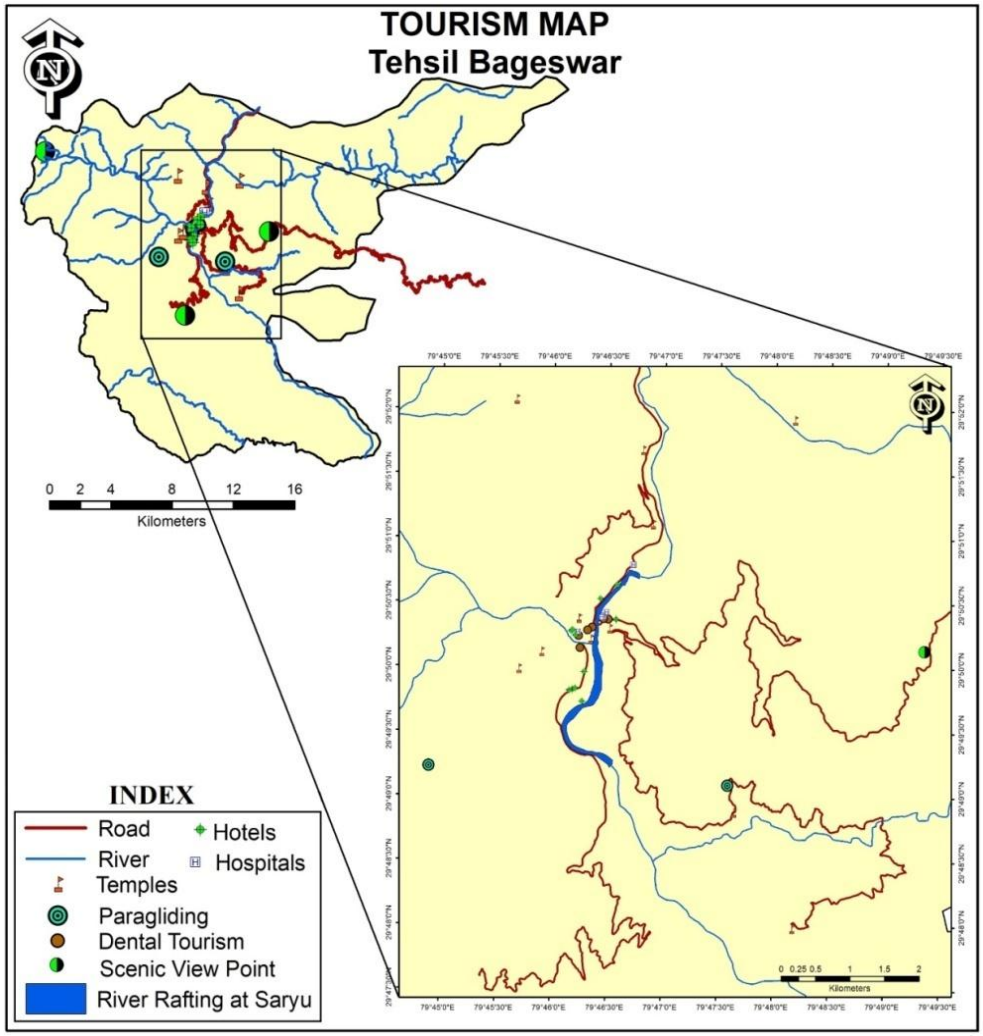

मानचित्र 3: तहसील बागेश्वर का पर्यटन मानचित्र (क्षेत्र भ्रमण के आधार पर)।

बागेश्वर तहसील में पर्यटन के प्रकार

अध्ययन क्षेत्र की विशेषताओं के आधार पर बागेश्वर में पर्यटन को निम्नलिखित भागों में वर्गीकृत गया है–

प्राकृतिक दृश्य आधारित पर्यटन

प्राकृतिक दृश्य भूमि के किसी एक हिस्से की सुस्पष्ट विशेषतायें हैं, जिनमें इसके प्राकृतिक स्वरूपों के भौतिक तत्व, जल निकाय जैसे कि नदियॉ, झीलें एवं समुद्र, प्राकृतिक रूप से उगने वाली वनस्पतियों सहित धरती पर रहने वाले जीव–जन्तु, मिट्टी से बनी उपयोगी मानव निर्मित वस्तुओं सहित भवन एवं संरचनायें और अस्थाई तत्व जैसे कि विद्युत व्यवस्था एवं मौसम संम्बन्धी परिस्थितियॉ शामिल हैं। मानचित्र–4 में बागेश्वर के मुख्य प्राकृतिक दृश्य स्थलों को दर्शाया गया है तथा छायाचित्र–2 से छायाचित्र–8 तक प्राकृतिक दृश्य आधारित पर्यटन के उदाहरण प्रस्तुत किये गये है। इस पर्यटन के अंतर्गत निम्न भौतिक दृश्यों को शामिल कर सकते हैं– गौरी उडियार, बिगुल, उखलसू झरना, विजयपुर, पांडु स्थल, मनकोट, रानी महल, देवकी वाटिका एवं नर्सरी उद्यान।

गौरी उडियार– गौरी उडियार का भौगोलिक निर्देशांक 29°54′00.88′′ N तथा 79°46′23.21′′ E है तथा समुद्र तल से इसकी ऊॅचाई 298 मीटर है जो प्राकृतिक और धार्मिक दोनों रूपों से

महत्व है। प्राकृतिक रूप में गुफा के अंदर विभिन्न स्थलरूप बने हुये हैं जिन्हें स्थलाकृतिक भूगोल में स्टैलैक्टाइट तथा स्टैलैगमाइट कहा जाता है। गुफा के अंदर मॉ गौरी का प्रसिद्व मंदिर है इसलिये इसका महत्व धार्मिक रूप से भी है। यह पर्यटन स्थल बागेश्वर से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

बिगुल– नंदा देवी और पंचाचूली चोटियों के कारण हिमालय का बिगुल नामक अद्भुद दृश्य बागेश्वर के प्रमुख पर्यटक स्थानों में गिना जाता है। बिगुल बागेश्वर शहर से लगभग 32 किलोमीटर दूर स्थित है। यह स्थान ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आस–पास के ग्रामीण लोगों से कर वसूलने की घोषणा के लिये ब्रिटिश सरकार ने इस स्थान पर बिगुलस का इस्तेमाल किया था। बिगुल के सबसे ऊॅचे स्थान पर ढोलिनाग मंदिर है जो यहॉ के स्थानीय लोगों की आस्था का केंन्द्र है।

उखल्सू झरना– यह प्राकृतिक झरना बागेश्वर मुख्यालय से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसकी भैगोलिक स्थिति $29^{\circ}51'46.68''$ N तथा $79^{\circ}58'35.80''$ E है तथा समुद्र तल से इसकी ऊॅचाई 1090 मीटर है। यह बागेश्वर तहसील का सबसे ऊॅचाई पर स्थित झरना है। इसकी ऊॅचाई लगभग 25 मीटर है। इसके अलावा यहॉ भ्रमण करने के पश्चात विजयपुर प्रसिद्व पर्यटक स्थल अगला पड़ाव होता है।

विजयपुर प्रसिद्व पर्यटक स्थल– बागेश्वर के प्रसिद्व और दर्शनीय स्थानों में से विजयपुर भी बहुत लोकप्रिय स्थान है यह बर्फ से ढ़के हिमालय की चोटियों का बहुत ही शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है। विजयपुर बागेश्वर से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बहुत से पर्यटक यहॉ आनंद की अनुभूति करने आते हैं क्योंकि यह दृश्य मन को बहुत शकून देने वाला है। यहॉ आस–पास सुन्दर मैदान भी है और ऊॅची चाटियॉ बहुत ही आकर्षक हैं।

पांडुस्थल पर्यटन स्थल– कौरवों और पाण्डवों के बीच हुये युद्व का साक्षी पाण्डु स्थल बागेश्वर के सबसे सुन्दर दृश्यों में से एक है। इस स्थान पर सुन्दर ग्लेशियरों का नजारा बहुत ही अद्भुत दृश्य होता है। पर्यटक यहॉ ट्रैकिंग के लिये आते हैं और इस ट्रैकिंग की लंबाई लगभग 15 किलोमीटर है। ट्रैकिंग के साथ हिमालय के इस शानदार दृश्य का नज़ारा देखना बहुत ही अच्छा अनुभव प्रदान करने वाला होता है।

मनकोट– यह पर्यटन स्थल बहुत ही आकर्षक पर्यटन स्थल है जो बागेश्वर मुख्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहॉ पर मुख्य रूप से यह जगह स्थानीय पर्यटन के प्रसिद्व है। यहॉ पर प्रायः ग्रीष्म ऋतु के दौरान बागेश्वर के स्थानीय लोग भ्रमण के लिये जाते हैं।

रानी महल– यह पर्यटन स्थल बागेश्वर नगरपालिका से 14 किलोमीटर दूर चौगॉव छीना नामक स्थान पर स्थित है। पहले इस जगह पर पहाड़ी गानों के सूटिंग के लिये लोग आते थे। लेकिन इस जगह का पुनः जीर्णोद्धार करने पर यहॉ पर्यटन की अधिक संभावना है। यहॉ से चारों ओर का विहंगम दृश्य देखने को प्राप्त होता है।

देवकी वाटिका– यह उद्यान बागेश्वर तहसील के मण्डल सेरा नामक स्थान पर स्थित है। यहॉ पर दुर्लभ प्रकार की पौधों की प्रजातियॉ पाई जाती हैं। यह उद्यान लगभग 200 मीटर वर्ग में फैला है जिसमें से रूद्राश का पेड़ प्रमुख है जिसे देखने के लिये दूर–दूर से पर्यटक यहॉ आते हैं। यहॉ पर पेड़–पौधों की प्रजातियों के अलावा सब्जी, फलदार वृक्ष की कई नई प्रजातियॉ का भी रोपण किया गया है। यहॉ पर जाने वाले पर्यटक को उपहार स्वरूप ये दो–तीन वृक्ष के पौधे बिना शुल्क के वितरित भी करते हैं।

नर्सरी उद्यान– इसकी भौगोलिक स्थिति बागेश्वर ठाकुरद्वारा में स्थित है। इसका समन्वय बागेश्वर सरकार द्वारा किया जाता है। यहॉ पर भी विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों का रख–रखाव उद्यान विभाग के कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। यहॉ पर वृक्षों की प्रमुख प्रजातियों में ताड़, नारियल, आम, इमली, पपीता आदि हैं।

साहसिक पर्यटन– जिला पर्यटन विभाग द्वारा जिला योजना साहसिक पर्यटन मद के अंर्तगत प्रत्येक वित्तीय वर्ष में पैराग्लाइडिंग, राफ्टिंग, बेसिक एडवैन्चर फाउन्डेशन कोर्स, ट्रैकिंग, संचालित किये जाते हैं। जिसमें जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया जाता है। मानचित्र–5 में तहसील बागेश्वर के साहसिक पर्यटन स्थनों को प्रदर्शित किया गया है। साहसिक पर्यटन अवकाश क्रियाओं का एक और पहलू है, जो लोकप्रिय होता जा रहा है, और इस क्षेत्र के क्रियाकलापों के लिए तहसील बागेश्वर में अपार सम्भावनाएं है जिसे निम्न दो भागों में विभक्त किया गया है–

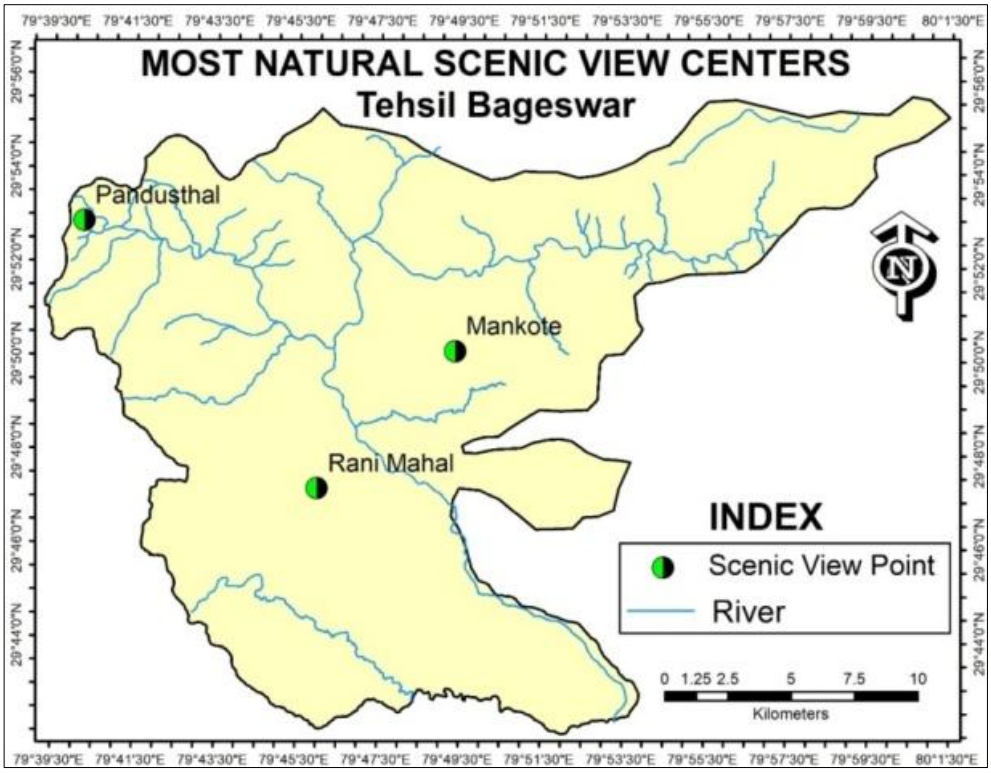

मानचित्र 4: प्राकृतिक दृश्य आधारित पर्यटन (क्षेत्र भ्रमण के आधार पर)।

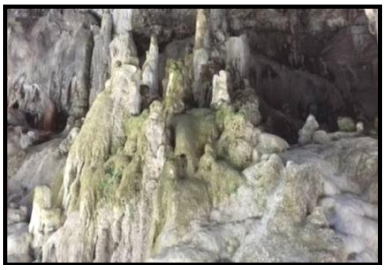

छायाचित्र 2: गौरी उडियार,

छायाचित्र 3: विजयपुर प्रसिद्व पर्यटक स्थल,

छायाचित्र 4: बिगुल

छायाचित्र 5: पांडुस्थल

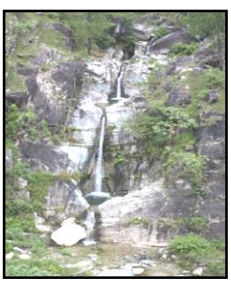

छायाचित्र 6: उखल्सू झरना,

छायाचित्र 7: देवकी लघु वाटिका,

छायाचित्र–8: राजकीय पौधालय जनपद बागेश्वर

रीवर रॉफ्टिंग– रिवर राफ्टिंग यानि नदियों की उफनती लहरों को चीरते हुये नावों की सवारी करना। सफेद पानी राफ्टिंग ज्यादातर सफेद पानी के रूप में जाना जाने वाले किसी न किसी जल निकायों पर होता है। जो एक मनोरंजक मॉड्यूल में कढ़ाई

वाले कट्टर खेल और रोमांच का एक मिश्रण है। बागेश्वर में सरयू नदी का जल निकाय रोमांचकारी राफ्टिंग अनुभव प्रदान करता है। बागेश्वर में यह पिछले कुछ सालों से इस साहसिक खेल का आयोजन किया जा रहा है।

पैराग्लाइडिंग– रोमांचक एवं साहसिक खेलों के रूप में पैरा ग्लाइडिंग बहुत मसहुर है। निश्चित रूप से आपकी पीठ पर लगाये गये पंखों की तरह पैराशूट लगाये जाते हैं। हवा के साथ बातें करना हर पैरा ग्लाइंडिग का उद्देश्य है तथा पैराग्लाइडिंग तुलनात्मक रूप से भारत में साहसिक खेलों का एक नया जीन है जो लोकप्रियता को बहुत तेजी से प्राप्त कर रहा है। बागेश्वर तहसील में दो प्राकृतिक स्थलो पर पैराग्लाइडिंग का आयोजन किया जा रहा है–

माल्ता में पैराग्लाइडिंग– इसकी भैगोलिक स्थिति 29°49'13.63" N / 79°44'53.84" E है जो बागेश्वर मुख्यालय से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 2017 में दिल्ली से एक टीम आई थी जिसके निर्देशक प्रवीन राणा थे। उनके साथ 12 लोग और शामिल थे। वे यहॉ पर 2 सप्ताह तक रहे। इस खेल में प्रतिभाग करने वाले अन्य व्यक्तियों के नाम सैरीना चंद्रा, अदिती राव, नागेश कावली, असमिता मारवा, बैरू रघुराम, वैभव राठौर, कृष्णा रेड्डी, पायल रोहतगी, मनी शंकर, विनय शुक्ला, देवेन्द्र राणा, कुलदीप पवार आदि हैं (*पर्यटन विभाग बागेश्वर, 2021*)।

जौलकाण्डे में पैराग्लाइडिंग– इसकी भैगोलिक स्थिति 29°49'5.28"N / 79°47'35.50"E है जो बागेश्वर तहसील से 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर हैदराबाद की एक टीम ने 2019 में एक सप्ताह तक इस साहसिक खेल का पर्दापण किया, टीम का नेतृत्व प्रेम नारायण रेड्डी ने किया था। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले खिलाड़ियों के नाम अनुज नायर, सुधीर तेलांग, सुजीत मारकण्डेय, अनुराग आनंद, मधुर जैफरे, किरन देशाई, रितु ललित, अमरिता प्रितम, अमन नाथ, अशोक थापर, सुबोध दीपक सिंह हैं (*पर्यटन विभाग बागेश्वर, 2021*)।

छायाचित्र 9: सरयू नदी में रिवर राफ्टिंग

छायाचित्र–10: माल्ता जौलकाण्डे

चिकित्सा पर्यटन– जब लोग अपनी चिकित्सा या उपचार के लिये अपने देश से बाहर किसी अन्य देश की यात्रा करते हैं तो यह चिकित्सा पर्यटन (मेडिकल टूरिज्म) कहलाता है। कुछ दशकों पहले प्रायः कम विकसित देशों के लोग उच्च विकसित देशों के प्रमुख चिकित्सा केन्द्रों में अपने देश में अनुपलब्ध चिकित्सा उपचारों के लिये चिकित्सा पर्यटन करते थे। चिकित्सा पर्यटन, पर्यटन की एक नवीन और सबसे अधिक विकसित होती शाखा मानी जाती है। दुर्लभ परिस्थितियों वाले लोग उन स्थानों की यात्रा कर सकते हैं जहॉ उपचार बेहतर समझा जाता है। स्वास्थ्य पर्यटन यात्रा के लिये एक व्यापक शब्द है जो चिकित्सा, उपचार और स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के उपयोग पर केन्द्रित है। अतिविशिष्ट चिकित्सा देखभाल, उपकरण और सुविधाओं की यहॉ पर उपलब्धता के कारण पर्यटक बढ़ी संख्या में यहॉ आ रहे हैं। बागेश्वर तहसील में निम्न लिखित अस्पताल व क्लीनिक पर्यटकों को गुणवत्तापूर्ण और किफायती स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में दक्ष होता जा रहा है जिनको मानचित्र–6 में प्रदर्शित किया गया है। बागेश्वर तहसील में निम्न लिखित महत्वपूर्ण चिकित्सा अस्पतालों को चिकित्सा पर्यटन के अंर्तगत सम्मिलित किया जा सकता हैं– श्याम लाल साह गंगोला जिला अस्पताल, जंगपांगी अस्पताल, चौधरी आयुर्वेदिक अस्पताल, सीतापुर नेत्र चिकित्सालय, अमृतसर नेत्र क्लीनीक, चौहान क्लीनिक, मुस्कान डेन्टल अस्पताल, प्रकाश डेन्टल अस्पताल, कृष्णा डेन्टल अस्पताल, बागनाथ डेन्टल क्लीनिक, चंद्रकांता डेन्टल क्लीनिक, नेगी डेन्टल क्लीनिक, दुर्गा डेन्टल केयर क्लीनिक।

धार्मिक पर्यटन– बागेश्वर धार्मिक नगरी है, सूर्य के दक्षिणायन पक्ष से उत्तरायण पक्ष में उतरने पर पडने वाली मकर संक्रान्ति पर बागेश्वर में सरयू गोमती के संगम पर स्नान को जीवन का पवित्र स्नान माना गया है। इस पवित्र दिन उत्तराखण्ड सहित देश के अनेक भागों से लोग बागेश्वर में पवित्र स्नान करने आते हैं। धार्मिक पर्यटन के अंर्तगत बागनाथ मंदिर, चण्डिका मंदिर, नीलेश्वर मंदिर, राधा–कृष्ण मंदिर, श्री हरू मंदिर, भगवती मंदिर (कठायतवाड़ा), भगवती मंदिर (आरे), भगवती मंदिर (माल्ता), कुकुडा माई मंदिर, उल्का मंदिर, प्रकटेश्वर मंदिर, रामजी मंदिर, गोलू मंदिर, सूरजकुण्ड मंदिर, अग्निकुण्ड मंदिर एवं गणेश मंदिर इत्यादि मंन्दिर समूहों को सम्मिलित किया जा सकता हैं। मानचित्र–7 में तहसील बागेश्वर के धार्मिक पर्यटन स्थानों को प्रदर्शित किया गया है, जिनका विवरण निम्नप्रकार प्रस्तुत है–

साहसिक पर्यटन– जिला पर्यटन विभाग द्वारा जिला योजना साहसिक पर्यटन मद के अंर्तगत प्रत्येक वित्तीय वर्ष में पैराग्लाइडिंग, राफिटिंग, बेसिक एडवैन्चर फाउन्डेशन कोर्स, ट्रैकिंग, संचालित किये जाते हैं। जिसमें जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया जाता है। मानचित्र–5 में तहसील बागेश्वर के साहसिक पर्यटन स्थनों को प्रदर्शित किया गया है। साहसिक पर्यटन अवकाश क्रियाओं का एक और पहलू है, जो लोकप्रिय होता जा रहा है, और इस क्षेत्र के क्रियाकलापों के लिए तहसील बागेश्वर में अपार सम्भावनाएं है जिसे निम्न दो भागों में विभक्त किया गया है–

बागनाथ– बागेश्वर का बागनाथ शिवालय (छायाचित्र–11) कत्यूरी काल की शिल्प धरोहर है। यहॉ सावन के महीने में पर्यटक विशेष पूजा–पाठ भी करते हैं। शिवालय परिसर में ही यहॉ की पुरातन मूर्तियों का संग्रह भी है जो पर्यटकों के आर्कषण का केन्द्र रहता है। यहॉ प्राचीन कत्यूर काल के मन्दिर समूह बागेश्वर नगर में अवस्थित हैं। इस मंन्दिर का निर्माण 1450 में कुमांऊ के राजा लक्ष्मी चंद द्वारा किया गया था। मंन्दिर का वास्तु विवरण नागर शैली में हुआ है, इस मंन्दिर की समुद्र की तल से ऊँचाई 1004 मी0 है। यह मंदिर भगवान शिव के वाघ रूप में ऋषि बागेश्वर का बागनाथ मंदिर है। बागेश्वर का नाम भी बागनाथ मंदिर के नाम पर ही पड़ा ळें

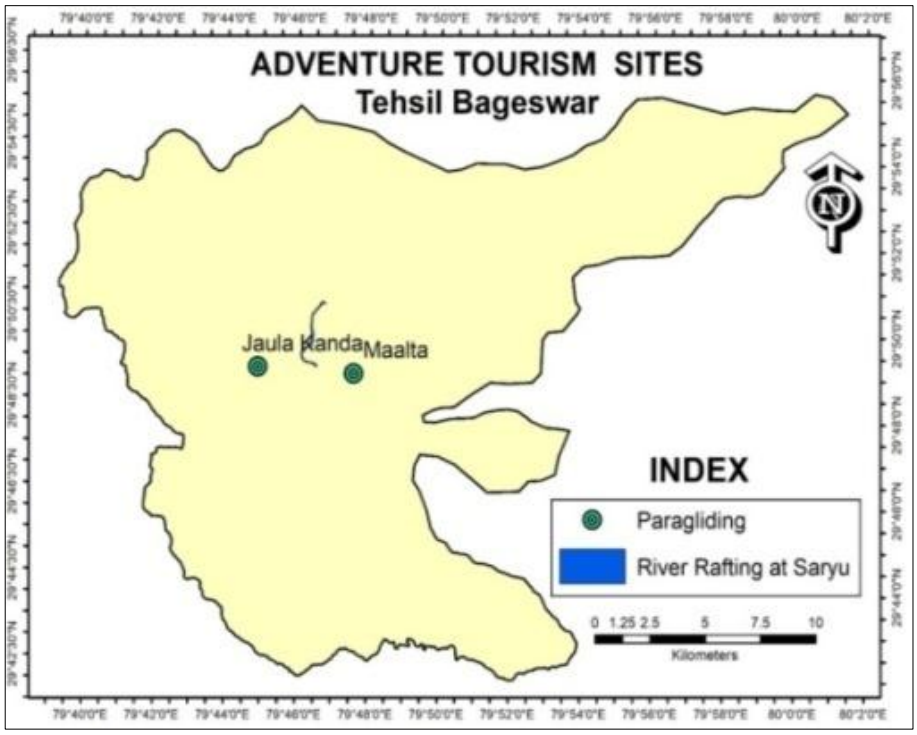

मानचित्र 5: तहसील बागेश्वर में साहसिक पर्यटन (क्षेत्र भ्रमण के आधार पर)।

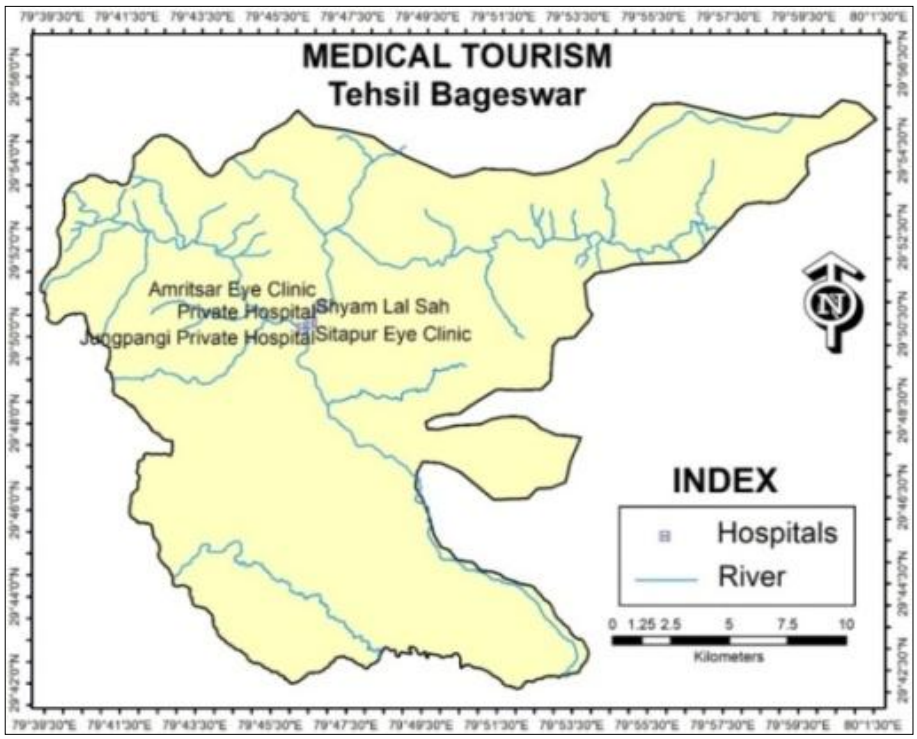

मानचित्र 6: तहसील बागेश्वर में चिकित्सा पर्यटन (क्षेत्र भ्रमण के आधार पर)।

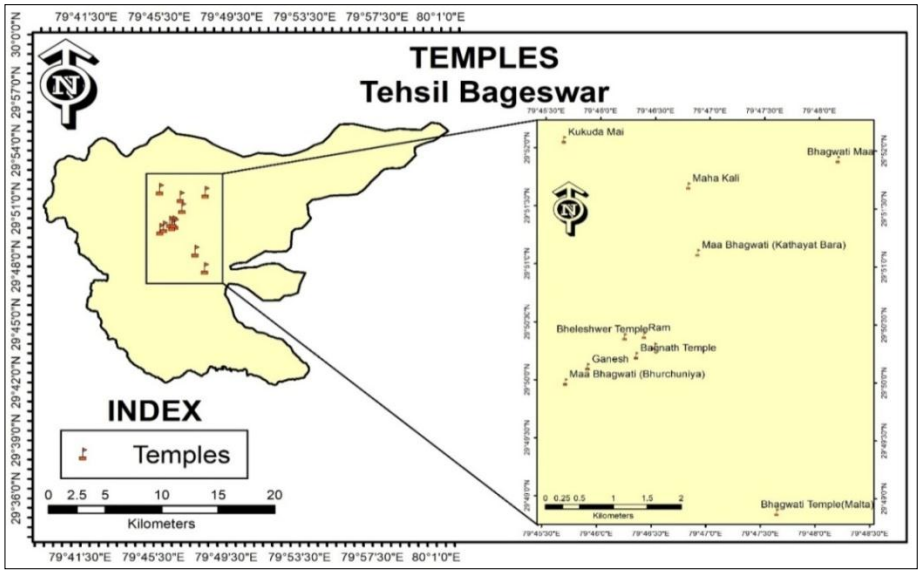

मानचित्र 7: तहसील बागेश्वर में धार्मिक पर्यटन (क्षेत्र भ्रमण के आधार पर)।

चण्डिका मन्दिर– इस मंन्दिर का अक्षांशीय तथा देशांन्तरीय विस्तार 29°50′24.37′′N से 79°46′34.24′′E तक है जो समुद्र तल से 807 मी0 की ऊँचाई पर स्थित है। इस मन्दिर की खास विशेषता यह यह है कि मॉ चण्डिका के आर्शीवाद के लिये यहॉ पर विवाह समारोह आयोजित की जाती है। इस मन्दिर की स्थिति बागनाथ मन्दिर के सामने ऊँची पहाड़ी में लगभग 150–200 मीटर दूरी पर स्थित है। चंडिका मंदिर बागेश्वर शहर से लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जोकि देवी दुर्गा के नौ रूपों में से एक है, जहॉ देवी दुर्गा का नौ दिवसीय त्यौहार मनाया जाता है। यह त्यौहार पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है और पर्यटक इस त्यौहार का हिस्सा बनना पसंद करते हैं।

नीलेश्वर/भीलेश्वर मन्दिर– इस मन्दिर का अक्षांशीय तथा देशांन्तरीय विस्तार 29°50′23.46′′N से 79°46′16.61′′E तक है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 807 मी0 है। यह मन्दिर बागनाथ मन्दिर (छायाचित्र–12) के 150 मीटर उत्तर, तीव्र चढ़ाई में स्थित है। स्थानीय परंपरा के अनुसार इस मन्दिर के बारे में यह कहा जाता है कि महा शिवरात्री के दिन पहले बागनाथ में जल चढ़ाने के बाद इस मन्दिर के दर्शन करना अनिवार्य होता है।

श्रीहरू मन्दिर– इस मंदिर के निर्देशांक 29°47′59′′ N तथा 79°48′15′′ E है तथा समुद्र तल से औसत ऊँचाई लगभग 1397 मी0 है। श्रीहरू मन्दिर बागेश्वर से लगभग 15 किलोमीटर दूरी पर दफौट नामक गॉव में स्थित है। भक्तों का मानना है कि यहॉ इच्छा पूर्ति के लिये की प्रार्थना हमेशा फलित होती है। यहॉ हर साल नवरात्रों के बाद विजयादशमी के दिन एक बड़े मेले का आयोजन किया जाता है। यहॉ से बर्फ से ढ़की हिमालय की चोटियॉ का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

भगवती मंन्दिर– इसकी अक्षांशीय एवं देशांन्तरीय स्थिति 29°51′08.92′′ N तथा 79°46′49.42′′ E है तथा समुद्र तल से ऊँचाई 446 मी0 है। इस मन्दिर में मॉ भगवती की सुन्दर मूर्ति विराजमान की गई है। यहॉ पर समय–समय पर पूजा अर्चना की जाती है। नवरात्री पर्व के समय यहॉ लोक आस्था देखने को मिलती है।

भगवती मंन्दिर (भुरचुनिया धार)– इस मन्दिर का अक्षांशीय एवं देशांन्तरीय विस्तार 29°49′57.36′′ N से 79°45′41.98′′ E है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 720 मी0 है। यहॉ पर नवरात्री पर्व धूम–धाम से मनाया जाता है। यह स्थान ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यहॉ से बागेश्वर नगर का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

मॉ महाकाली मन्दिर– इस मंन्दिर का अक्षांशीय तथा देशांन्तरीय विस्तार 29°52′44.05′′ N से 79°46′49.22′′ E तक है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 370 मी0 है। इस मन्दिर की स्थिति काठायतवाड़ा से 1 किमी0 दूर पिण्डारी रोड पर स्थित है। इस मन्दिर में नवरात्री पर्व के समय महाकाली की भक्तिभाव से पूजा अर्चना की जाती है।

भगवती मंदिर (माल्ता)– इसके निर्देशांक 29°48′52.62′′ N तथा 79°47′39.30′′ E है यह मंदिर समुद्र तल से 456 मीटर की दूरी पर स्थित है। यह मंदिर बागेश्वर नगर से 4 किलोमीटर की दूरी पर माल्ता नामक जगह पर स्थित है जो एक साहसिक खेल पैराग्लाइडिंग करने का स्थान भी है। यह एक भव्य मंदिर है यहॉ से आस–पास के क्षेत्र का मनोरम एवं विहंगम दृश्य देखने को मिलता है।

कुकुड़ मैया मन्दिर– इसका अक्षांशीय तथा देशांन्तरीय विस्तार 29°52′04.28′′ N से 79°45′40.10′′ E है इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 1003 मी0 है। इस मन्दिर की स्थिति बागेश्वर तहसील में सबसे ऊँचाई पर है। यहॉ पहुचने का मार्ग अति तीव्र चढ़ाई से होकर गुजरना पड़ता है। ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यहॉ से हिमालय तथा कौसानी का विहंगम् दृश्य दिखाई देता है।

गणेश मन्दिर– इसकी अक्षांशीय एवं देशांन्तरीय स्थिति 29°50′06.38′′ N से 79°45′55.22′′ E तक है जो समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 70 मी0 है। गणेश मन्दिर बागेश्वर नगर मुख्यालय के नदी गॉव वाली रोड पर स्थित है। यहॉ पर स्थानीय स्तर पर प्रत्येक दिन पूजा अर्चना की जाती है।

छायाचित्र 11: बागनाथ मंदिर

छायाचित्र 12: नीलेश्वर महादेव मंदिर

सांस्कृतिक पर्यटन

सांस्कृतिक पर्यटन एक देश या क्षेत्र की संस्कृति के साथ एक यात्री की भागीदारी से सम्बन्धित पर्यटन का उपसमूह है। जो विशेष रूप से किसी भौगोलिक क्षेत्रों में लोगों की जीवन शैली, उन लोगों का इतिहास, इनकी कला, वास्तु कला, धर्म और अन्य तत्व जो कि अपने जीवन के तरीके को आकार देने में मद्द करता है। विश्व पर्यटन संगठन इसे ''सांस्कृतिक उद्देश्यों जैसे– अध्ययन पर्यटन, कलात्मक पर्यटन और सास्कृतिक यात्रा, त्यौहारों या अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों की यात्रा, साइटों और स्मारकों के दौरे, प्रकृति की खोज के लिये यात्रा, अध्ययन के रूप में अनिवार्य रूप से सांस्कृतिक उद्देश्यों वाले लोगों की गतिविधियों को'' परिभाषित करता है। सांस्कृतिक पर्यटन के अंतर्गत उत्तरायणी मेले का वर्णन करना अपेक्षित है–

उत्तरायणी मेला– मकर संक्रांति पर बागेश्वर में हर साल उत्तरायणी मेला जगता है जो कि लगभग एक सप्ताह तक चलता है। मेला मकर संक्रांति के पूर्व संध्या से प्रारम्भ होता है, इसे घुघुतिया त्यौहार के रूप में भी मनाया जाता है। इस मेले में दूर–दूर से श्रद्वालु पहुचते हैं और मकर संक्रांति के दिन सरयु और गोमती नदी के संगम पर मुंडन और जनेऊ संस्कार, कर्ण भेदन, स्नान एवं बागनाथ मन्दिर में दर्शन करते हैं। वर्तमान समय में उत्तरायणी मेले के दौरान तहसील परिसर से झॉकी निकलती है जो कि नुमाइस खेत तक जाती है। जिसमें प्रशासन के लोगों के साथ–साथ विद्यालयों के बच्चे, सांस्कृतिक दलों व शहर के लोग सिरकत करते हैं तथा पूरे भक्तिमय माहौल के साथ–साथ प्रतियोगितायें, लोक कलाकारों की प्रस्तुतियॉ व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी धूम रहती है जिसमें अन्य जिलों व स्थानों से विभिन्न सांस्कृतिक दल भाग लेने आते हैं। धार्मिक और व्यापारिक रूप से विख्यात यह मेला चंद वंशीय राजाओं के समय से काफी प्रसिद्व है। जिनके शासन काल में ही माघ मेला (उत्तरायणी मेला) की नींव पड़ी। बागेश्वर की समस्त भूमि से उत्पन्न उपज का एक बड़ा भाग मंदिरों में चढ़ावे के रूप में जाता था। मेले की सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यता संगम पर नहाने की थी एवं इसे मकर स्नान के नाम से भी जाना जाता था जो एक माह तक किया जाता था।

भगवान बागनाथ के दर्शन और संगम पर डुबकी लगाने दूर–दूर से श्रृद्धालु तो आते ही हैं, व्यापार हेतू भी व्यापारी कुमांऊ के साथ–साथ गढ़वाल, नेपाल, तराई आदि जगहों से आते हैं। ब्रिटिश लेखक ई0 शर्मन ओकले ने अपनी किताब 'होली हिमालयाज' में बागेश्वर के उत्तरायणी मेले को कुमांऊ का सबसे बड़ा मेला कहा है, जहॉ हजारों की संख्या में लोग पहुचते हैं। पुराने समय पर भी तिब्बत प्रदेशों से, गढ़वाल से, नेपाल व देशी व्यापारी भी आते थे। मेले में कई हस्त निर्मित सामानों का व्यापार भी होता है जैसे तरह–तरह के बर्तन, काठ के बर्तन, चटाईयॉ, दरी, कम्बल, पंखियॉ, पशमिने, जड़ी–बूटियॉ, मिठाईयॉ, श्रृंगार का सामान आदि। नुमाइस खेत में तरह–तरह के स्टॉल लगते हैं जिनमें बीज, कृषि औजार, पहाड़ी फलों के जूस आदि प्रकार के स्टॉल होते हैं। कुली बेगार प्रथा को समाप्त करने के लिये बद्री दत्त पाण्डे जी के नेतृत्व में चलाये गये आन्दोलन में हरगोविन्द पंत जी, विक्टर मोहन जोशी, ईश्वरी लाल साह आदि की सहभागिता के साथ मकर संक्रान्ति के दिन ही 1921 में सरयू बगड़ में सरकारी रजिस्टरों को फाड़कर सरयु की अविरल धारा में बहा दिया था, जोकि बागेश्वर के उतरायणी कौतिक इतिहास का गौरवान्वित पृष्ठ है। इस आंदोलन की सफलता के बाद *'बद्री दत्त पाण्डे जी'* को *'कुमांऊ केसरी'* की उपाधि मिली थी।

पर्यटकों के लिये आवास गृह/होटल की सुविधायें

आवास पर्यटन का ही एक हिस्सा है यह पर्यटकों के लिये घर से दूर एक घर उपलब्ध कराता है, वर्तमान समय में होटल उद्योग एक अत्याधुनिक उद्योग है जो पर्यटकों को आवास सुविधा प्रदान करने की बढ़ती मांग के अनुरूप होटल उद्योग का विकास हुआ है। वर्तमान समय में जनपद बागेश्वर के तहसील बागेश्वर में उपस्थित पर्यटन आवास/होटल– नरेन्द्रा पैलेस होटल, होटल राजदूत, होटल सिद्वार्थ, होटल गोमती, होटल सिवार्क, होटल विवेक, होटल श्री बागनाथ पैलेस, होटल अम्बिका, होटल आशीश, होटल प्रशांत हैं जिनको मानचित्र–8 में प्रदर्शित किया गया है।

पर्यटन से संबंधित योजनायें

दीन दयाल उपाध्याय गृह आवास (होम स्टे) विकास योजना– होम स्टे की अवधारणा ''परिवार या दोस्तों के साथ मिलकर दूसरे देश या भारत में कहीं भी पर्यटन या काम के लिये दूसरे शहर में आने वाले लोगों को सेवा देना होता है, इसमें मेहमानों को एक होटल में दी जाने वाली सभी सुविधाओं के अलावा घर जैसा एहसास दिया जाता है।'' अतिथि उत्तराखण्ड गृह आवास योजना उत्तराखण्ड के सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में कई ऐसे पर्यटक स्थल अवस्थित हैं, जो कि अपनी नैसर्गिक छटा एवं सांस्कृतिक विरासत को अपने में समेटे हुये हैं, किन्तु उन स्थलों पर पर्यटकों हेते उचित आवास एवं खान–पान की सुविधा न होने के कारण वे इन पर्यटकों स्थलों का आनन्द लेने से वंचित रह जाते हैं। अतिथि उत्तराखण्ड गृह आवास (होम स्टे) नियमावली के माध्यम से राज्य के शहरी क्षेत्रों के साथ–साथ दूरस्थ पर्यटक क्षेत्रों में पर्यटकों को आकर्षित करने हेतू, स्तरीय आवासीय सुविधा बढ़ाने, स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने तथा भवन स्वामियों को अतिरिक्त आय का स्रोत उपलब्ध कराये जाने के उद्वेश्य से अतिथि उत्तराखण्ड गृह आवास नियमावली तैयार की जा रही है। अतिथि–उत्तराखण्ड *'गृह आवास (होम स्टे)' नियमावली* के शुभारंभ के पीछे मूल विचार विदेशी और घरेलू पर्यटकों के लिये एक साफ और किफायती तथा ग्रामीण क्षेत्रों तक स्तरीय अवासीय सुविधा प्रदान करना है। इससे विदेशी पर्यटकों को भी एक भारतीय परिवार के साथ रहने उनकी संस्कृति का अनुभव व परंपराओं को समझने और स्थानीय व्यंजनों के स्वाद के लिये एक उत्कृष्ट अवसर मिलेगा।

होम स्टे दूसरी जगह से आये मेहमानों को उनके घर जैसा माहौल प्रदान करता है इसलिये ज्यादातर लोग होटल के बजाय होम स्टे को प्राथमिकता देते हैं। यह एक अच्छा परिवर्तन पर्यटन क्षेत्र में देखा जा सकता है जिसके अंतर्गम विदेशी/भारतीय पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति जो कि *'अतिथि देवो भवः'* है से सीधे सम्बन्ध बना सकते है तथा अपनाने का भी प्रयास कर सकते हैं। होम स्टे व्यवसाय में मिलने वाली इनकम आयकर के दायरे में आती है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि होम स्टे व्यवसाय किस पैमाने पर शुरू किया गया है अर्थात यह इनकम के आधार पर निर्धारित होता है।

होम स्टे की प्रक्रिया– कोई व्यक्ति पर्यटन स्पॉट के आस–पास अपने घर को होम स्टे के लिये आवेदन करना चाहता है तो उसे उत्तराखण्ड पर्यटन विभाग की वैब साइट पर जाकर आवेदन करना होगा। जिससे पर्यटकों को इन्टरनेट से सूचना आसानी से मिल जाती है तथा अपने गंतव्य को निर्धारित करता है। सुविधायें उपलब्ध होने से वह अपने समयानुसार वहॉ रूक सकता है। इस प्रक्रिया में जब भी आवेदक आवेदन करता है, उसका आवेदन 2 साल के लिये वैध होता है फिर अगर आवेदक चाहे तो पुनः 2 साल के बाद लाइसेंन्स के लिये आवेदन कर सकता है, यह आवेदक पर निर्भर करता है। बागेश्वर जनपद में अतिथि उत्तराखण्ड गृह आवास योजना 2018 में प्रारम्भ किया गया था। वर्तमान समय में (2020–21) बागेश्वर तहसील में कुल होम स्टे आवेदक जिन्होंने अपने घर को होम स्टे योजना के अंतर्गत संचालित किया है इनकी संख्या 6 है। कोरोना महामारी के चलते पर्यटकों के कम आगमन से यह अभी कम हुआ है तथा इस संकट काल के गुजर जाने के बाद इस योजना के बढ़ने के आसार हैं। बागेश्वर तहसील में होम स्टे योजना का संचालन का विवरण तालिका–2 में प्रदर्शित किया गया है।

होम स्टे योजना में कक्षों की संख्या तथा श्रेणी– इस योजना के अंर्तगत कम से कम 1 तथा अधिकतम 6 कमरे आ सकते हैं इससे ज्यादे का प्रावधान इस योजना के अंर्तगत सम्मिलित नहीं किया गया है। स्वच्छता होनी बहुत जरूरी है, टाइलेट, बाथरूम साफ स्वच्छ हों और व्यक्ति को परिवार के जैसा महसूस कराना है। वह भी हमारी संस्कृति से रूबरू हों, हम भी उसकी संस्कृति को जानें। इससे संस्कृति का अदान–प्रदान होता है तथा एक–दूसरे को जानने का मौका भी मिलता है। इस योजना के अंतर्गत कक्षों की श्रेणियों का भी वर्गीकरण किया गया है तथा कमरों की संख्या के आधार पर अलग–अलग नाम दिये गये हैं। 1 से 2 कमरों को ब्रॉन्ज की श्रेणी में रखा गया है तथा 4 कमरों को गोल्ड की श्रेणी और 6 कमरों को सिल्वर की श्रेणी में रखा गया है।

तलिका 2: बागेश्वर तहसील में कुल होम स्टे का पूर्ण विवरण (स्रोतः पर्यटन विभाग बागेश्वर, 2020–21)।

क्र0 स0	होम स्टे का ग्राम/ स्थल का नाम	कक्षों की संख्या	होम स्टे संचालित करने वाले का नाम/पता	श्रेणी	दूरभाष नम्बर
1	ग्राम– बनखोला मण्डलसेरा, बागेश्वर	02	गिरीश चन्द्र पुत्र वीर राम (पार्वती होम स्टे)	ब्रॉन्ज	9675719533
2	ग्राम– मजियाखेत पोस्ट, बागेश्वर	02	हेमचन्द्र जोशी पुत्र गिरीशचन्द्र जोशी (हिमाशु होम स्टे)	ब्रान्ज	7500028188
3	ग्राम– पौड़ी, पो0– बिलौना, बागेश्वर	02	बसन्त बल्लभ पुत्र टीका राम (पाण्डे होम स्टे पौडी बागेश्वर)	ब्रान्ज	9997598156
4	ग्राम– पुरकोट, बागेश्वर	02	ललित मोहन पाण्ड पुण्डे पुत्र हरि दत्त पाण्डे (जय गौरी मैया होम स्टे)	ब्रान्ज	9917627253
5	ग्राम व पोस्ट– बौडी, बागेश्वर	02	मोहन सिंह रावत पुत्र नैन सिंह (मोहन सिंह रावत होम स्ट)	ब्रॉन्ज	9675962211
6	ग्राम– बिनवाल नदी गॉव, बागेश्वर	01	भगवती धपोला पत्नी हीरा सिंह धपोला (भगवती होम स्टे)	ब्रॉन्ज	8954527645

स्वदेश दर्शन व प्रसाद योजना– यह भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक योजना है। इस योजना के तहत देश के पर्यटन संबंधित सुविधाओं का विकास करना है। यह योजना केन्द्र सरकार के नेतृत्व में बेहतर तरीके से देश की *हेरिटेज सिटीज* को विकसित करने के लिये एवं पर्यटकों को आकर्षित करने से है।

पर्यटन पर्व योजना– केन्द्र सरकार द्वारा चलाई गई योजना *'पर्यटन पर्व'* इसमें यह तय किया गया कि एक व्यक्ति को 2022 तक भारत के कम से कम 15 पर्यटन स्थलों की यात्रा करनी चाहिये। पर्यटन मंत्रालय का इरादा उन लोगों को पुरस्कृत करने का है। जो साल के भीतर यह काम पूरा करते हैं।

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली योजना– वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के माध्यम से राज्य सरकार की सहायता से उत्तराखण्ड के नागरिक खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं। इस योजना के अंतर्गत इलैक्ट्रिकल बस या अन्य वाहनों के खरीदने पर सब्सिडी प्रदान की जायेगी।

संभावित पर्यटन स्थल

पर्यटन का अर्थ सिर्फ घुमना–फिरना नही है बल्कि ज्ञान प्राप्त करना भी है। जिसका उदाहरण हिमांचल के बागानों और अन्य कृषि कार्यों को देखने और समझने के लिये पर्यटकों का आवागमन रहता है। इसी प्रकार बागेश्वर के कमस्यार में बागवानी और कृषि आधारित पर्यटन का नया प्रयोग किया जा सकता है। कमस्यार परंपरागत रूप से संम्पन्न कृषि पट्टी रही है जहॉ की बासमती जो कभी कमस्यार की शान होती थी। यदि इस पट्टी में कृषि के शोधकार्य शुरू किये जायें तो पर्यटन को एक नया रूप भी दिया जा सकेगा। दुनिया में स्थापित पर्यटन कारोबार को बढ़ाने में पक्षियों का अपना महत्व है। कुछ सदाबहार पक्षियों को छोड़ दे तो कई प्रजाति के पक्षी बागेश्वर में फसल और ऋतु चक्र के दौरान विचरण करते हैं। यदि बागेश्वर क्षेत्र में पक्षियों के आगमन और प्रवास का व्यापक प्रचार–प्रसार करवाने के साथ कुछ सालों तक नियमित रूप से बर्ड वाचिंग के प्रक्षिशण जनपद भर में चलाये जायें तो बागेश्वर में प्रर्यटन की यह भी संभावना बन जायेगी।

उत्तराखण्ड में ख्यातिलब्ध पर्यटन केन्द्रों को छोडकर अन्य स्थानों में पर्यटकों की आवाजाही नगन्य है। बागेश्वर जनपद में पिण्डारी, कफनी और सुन्दर ढुंगा गलेशियर तक बहुत कम मात्रा में पर्यटक पहुॅच रहे हैं। कौसानी पर्यटन स्थल बहुत कम संख्या में पर्यटकों के आगमन को तैयार है जो एक सवाल बना है। बैजनाथ और बागनाथ को भी उत्तराखण्ड में धार्मिक पर्यटन के रुप में पहचान देने, विकसित करने तथा सदाबहार संचालित सड़कों से जोड़ा जाना बागेश्वर जनपद के पर्यटन की दिशा में नया मोंड़ ला सकती है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये हिमालय और हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं के पास अद्भुत आकर्षण है, इसके अतिरिक्त बागेश्वर वन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, ग्लेशियर विज्ञान, जलागम विज्ञान, आपदा विज्ञान, भू–गर्भ विज्ञान, पहाड़ पर पुरातन संपदा, पहाड़ की खेती, पहाड़ का सांस्कृतिक स्वरूप, पहाड़ की परंपरायें आदि विषयों की खुली प्रयोगशाला है। बागेश्वर तहसील में संभावित पर्यटन स्थलों को मानचित्र 9 में प्रदर्शित किया गया है जिनको फिल्ड सर्वे के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है व निम्न बिन्दुओं पर अंकित गया है–

- **साहसिक पर्यटन–** पौड़ी बैण्ड से मैकचूला पथारोहण साहसिक पर्यटन, गिरे छिना पथारोहण, टुकोरी डाना लघु उडियार, कुकुड़ा माई पथारोहण मार्ग।
- **धार्मिक पर्यटन–** उल्का मंदिर, प्रकटेश्वर मंदिर, राधा–कृष्ण मंदिर, गोलू मंदिर, सूरज कुण्ड, अग्नि कुण्ड, स्वर्ग आश्रम, अमित जी आश्रम।

प्राकृतिक दृश्य आधारित पर्यटन– टुकोरी डाना लघु उडियार, देवकी वाटिका, नर्सरी उद्यान ठाकुरद्वारा।

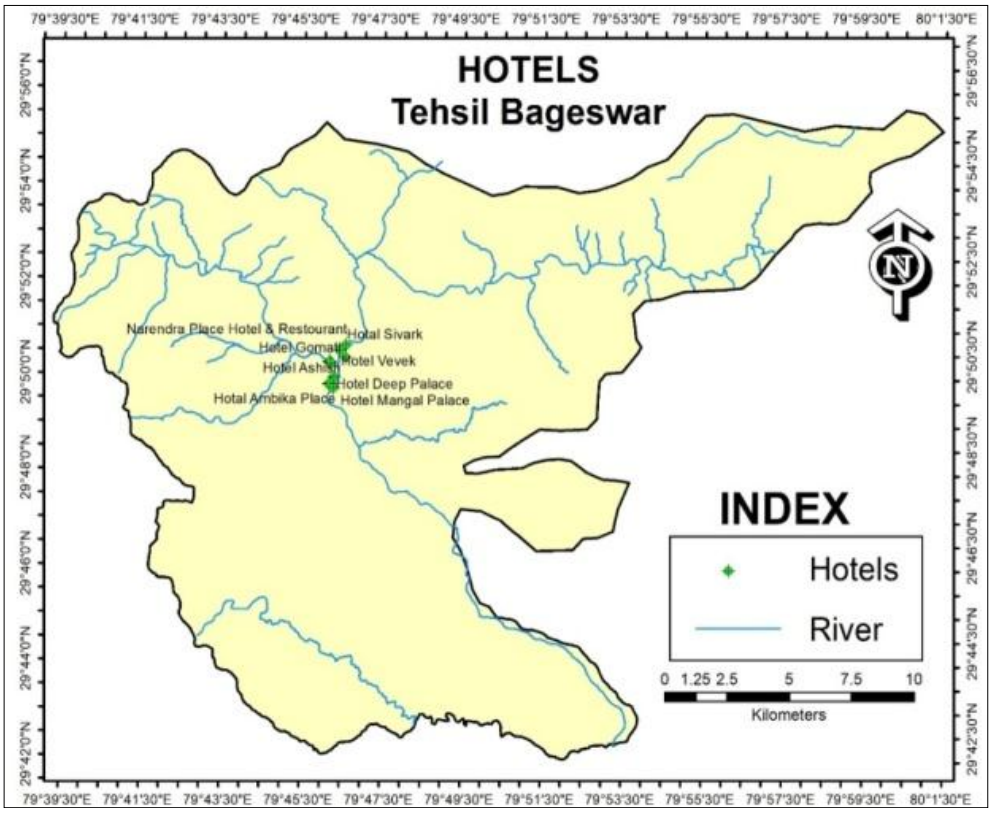

मानचित्र–8: तहसील बागेश्वर में पर्यटक आवास/होटल (क्षेत्र भ्रमण के आधार पर)।

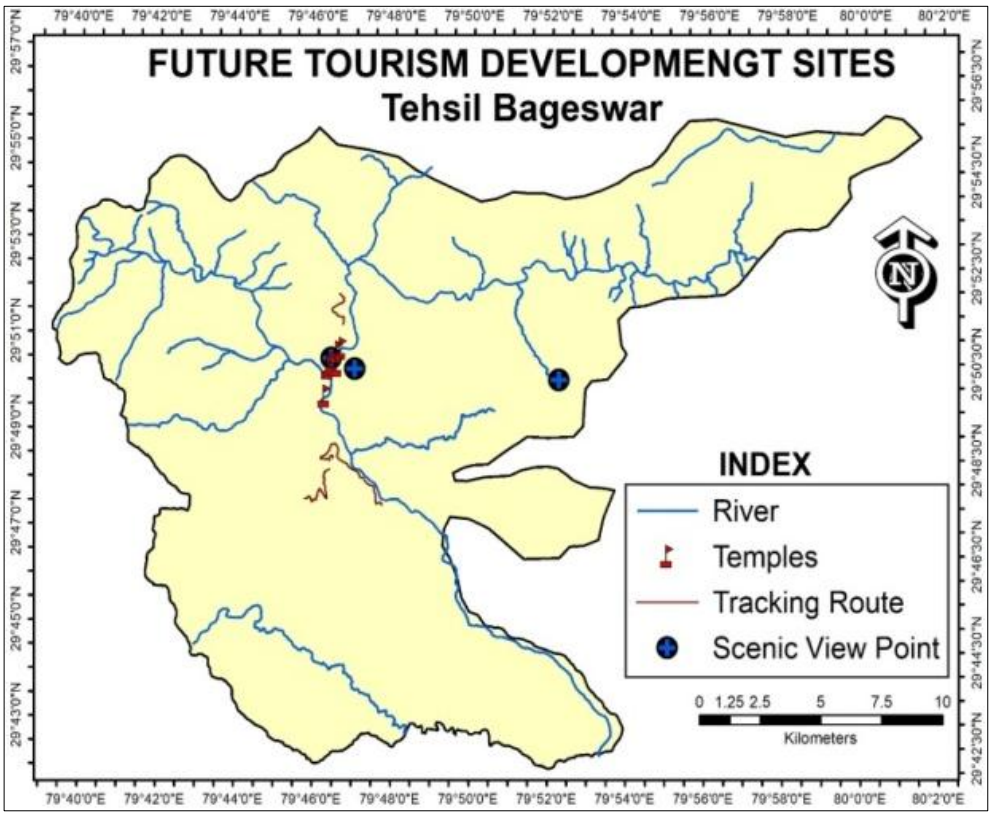

मानचित्र–9: तहसील बागेश्वर में संभावित पर्यटन स्थल (क्षेत्र भ्रमण के आधार पर)।

वैश्वीकरण के प्रयास

वैश्वीकरण का प्रभाव वर्तमान समय में विश्व के सभी क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होता है साथ ही पर्यटन उद्योग जो कि विश्व स्तर पर निरन्तर उभरने वाला उद्योग है, को भी प्रभावित किया है। पर्यटन हमारे समाज के कई भागों को अलग–अलग तरीके से प्रभवित करता है। पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जिसके विकास से किसी क्षेत्र का आर्थिक व सामाजिक विकास हो सकता है। उत्तराखण्ड एक ऐसा पर्वतीय राज्य है जहाँ कृषि योग्य भूमि सीमित है, तथा यह राज्य अपने धार्मिक व सांस्कृतिक क्रियाकलापों हेतु वर्तमान में विश्व प्रसिद्व है। राज्य के संदर्भ में पर्यटन विकास एक ऐसा बहुआयामी क्षेत्र है जहाँ से इस राज्य की धार्मिक स्थानों, अर्थव्यवस्था व संस्कृति को विश्व स्तर से जोड़नें के लिये एक नयी दिशा मिल सकती है। वर्तमान अध्ययन उत्तराखण्ड के एक पर्वतीय जनपद बागेश्वर पर आधरित पर्यटन के वैश्वीकरण के प्रभाव पर प्रस्तुत किया जा रहा है। बागेश्वर जनपद में साहसिक, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, शैक्षिक पर्यटन का विकास हुआ है। यहाँ देश–विदेश से पर्यटक सालभर भ्रमण करते है। पर्यटन का वैश्विक स्तर पर होने से इस क्षेत्र के आर्थिक विकास, सामाजिक परिवर्तन व संस्कृति के बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका के रुप में पायी जा सकती है, क्योंकि पर्यटन प्रचीन समय से ही संस्कृति के आदान–प्रदान का प्रमुख कारण रहा है। बागेश्वर जनपद के तहसील बागेश्वर में पर्यटन के वैश्वीकरण के लिये निम्न प्रयास किये गये हैं– सांस्कृतिक दिवार चित्रावली, भगवान शिव की मूर्ति, वेटिंग स्टॉप, सरयू बगड़ में दुकान हेतू लघु स्टॉल का निर्माण।

समस्यायें

- समस्त जिले के सभी प्रकार के पर्यटन उत्पादों की सूची का आभाव व मानचित्रण का अभाव।
- सड़क मार्ग व पगडंडी की समस्या, पर्यटकों के लिये आवासीय, यात्रा, पर्यटक मानचित्रों का अभाव।
- कूड़ा निस्तारण की समस्या तथा ईको ट्यूरिज्म के ज्ञान का अभाव साथ ही अनुप्रयोग की कमी।
- सुविधाओं के अभाव के कारण विदेशी पर्यटकों का वांछित आगमन नहीं हो पाता है।
- पलायन ग्रसित गॉवों को नजर अंदाज करना जिससे इन गॉवों में पलायन एक दीमक की तरह बढ़ रहा है।

सुझाव

- बागेश्वर तहसील के पर्यटन स्थलों में इको टूरिज्म का विकास, पारम्परिक संस्कृति व खान–पान को इण्टरनेट के माध्यम से विश्वभर में प्रदर्शनी व देशी–विदेशी पर्यटकों की सुविधावों का विस्तार किया जाना चाहिए। साथ ही नवीन पर्यटन स्थलों को चिन्हित कर उनका विकास करना तथा पौराणिक पर्यटन स्थलों का संरक्षण करने का प्रयास किया जाना चाहिए। प्राचीन स्थलों को सड़क से जोड़ने का प्रयास करना तथा आवागमन के साधनों की संख्या बढ़ाना।
- मेले, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद प्रतियोगितायें, समाज के अच्छे कार्यों व स्थानीय वस्तुओं को पर्यटकों के लिये आकर्षित बना कर प्रस्तुत करना व सभी माध्यमों से प्रचार–प्रसार करना। स्थानीय सामाग्री द्वारा पर्यटन स्थलों के सौन्दर्यीकरण के साथ–साथ विद्युतीकरण, पार्किंग आदि की सुविधायें उपलब्ध कराना।
- मेले आयोजन वाले स्थानों के आस–पास में भीड़ हेतु शौचालयों का निर्माण व उचित देखरेख/रखरखाव की व्यवस्था का होना अतिआवश्यक है। कूड़े के निस्तांतरण के लिए उचित प्रबंध का होना ही हमारे पौराणिक धरोहरों के लिये संरक्षण का कार्य करेगा, मेले वाले स्थानों में स्वच्छता रहेगी व पर्यटन को अच्छी दिशा में ले जायेगा।

निष्कर्ष

पर्यटन का प्रभाव वर्तमान समय में विश्व के लगभग सभी क्षेत्र विशेष में देखने को मिल रहा है। पर्यटन एक ऐसा उद्योग हैं जिसमें बिना किसी पर्यावरणीय हानि के आर्थिक विकास किया जा सकता हैं। विश्व बाजार में बागेश्वर के पारम्परिक वस्तुओं को प्रस्तुत कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता हैं एंव पारिस्थितिकीय तंत्रों को भी सुरक्षित किया जा सकता है, साथ ही यहॉ के पर्यटन विकास से स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त होगा, साथ ही साथ प्रवास की प्रवृत्ति को कम किया जा सकता है जो ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों व कस्बों की ओर रोजगार हेतु प्रतिवर्ष बढ़ रही हैं। बागेश्वर की संस्कृति की अपनी एक पहचान है इस लोकप्रिय संस्कृति की वजह से ही तहसील बागेश्वर के नगर बागेश्वर को उत्तर का वाराणसी कहा जाता है। वर्तमान समय में विदेशी पर्यटक बागेश्वर में भ्रमण के दौरान यहां के पारंपरिक वस्त्रों को धारण करते है तथा यहां की संस्कृति में शामिल हो जाते है। वर्तमान समय में पर्यटन एक बृहत उद्योग बन गया है। कई शहरों ने पर्यटन द्वारा अपनी आय में वृद्वि की है। उत्तराखण्ड में नैनीताल एक बड़ा पर्यटन स्थल है इसी तर्ज पर उत्तराखण्ड सरकार बागेश्वर में पर्यटन योजनाएँ शुरू करें तो बागेश्वर भी एक बड़ा पर्यटन स्थल के रुप में उभर सकता है। बागेश्वर में वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव को वर्ष 2018 के पर्यटन आंकड़ें से आंका जाता है। सतत पर्यटन, पर्यटन का वह रूप है जिसका अधिक उत्तरदायित्व के साथ उपयोग किया जा सकता है। यह एक मात्र विकल्प है। जिसके द्वारा नकारात्मक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों को कम किया जा सकता है। यह स्थानीय लोगों के लिये आर्थिक लाभ का अवसर प्रदान करता है और मेजबान समुदायों के कल्याण में वृद्वि करता है। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2017 को ''विकास के लिये सतत् पर्यटन का अंतराष्ट्रीय वर्ष'' किया है। इस संदर्भ में, यह पहले ही परिलक्षित हो सकता है कि अंतराष्ट्रीय समुदाय और राष्ट्र राज्य 2030 ऐजेण्डे को कितनी गंभीरता से ले रहें हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में सुदूर संवेदन एवं जी0आई0एस0 का उपयोग किया गया है, जिसमें पर्यटन क्षेत्रों को मानचित्रित करना, सम्भावित क्षेत्रों को इंगित करना व मानचित्र में प्रदर्शित करने हेतु किया गया है। सुदूर संवेदन एवं जी0आई0एस0 तकनीकि का उपयोग भावी पर्यटन के लिये वैश्वीकरण करने, बेहतर बनाने, मानचित्र के माध्यम से एक पटल पर लेकर आने हेतु किया जाता सकता है।

संदर्भग्रंथ

1. सिंह, ज0, (2005), पर्यटन भूगोल, शिवालिक प्रकाशन।
2. रावत, क0सिं0, (2016) उत्तराखण्ड बिन्सर ईयर बुक ।
3. जोशी, एस0सी0, (2004), उत्तराखण्ड पर्यावरण विकास।
4. बलूनी, डी0सी0 (2001), उत्तरांचल–संस्कृति, लोक जीवन, इतिहास एवं पुरातत्व, बरेली।
5. मैठाणी, प्रो0डी0डी0, प्रसाद, डॉ0गा0, नौटियाल, डॉ0रा0, (2010), उत्तराखण्ड का भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, प्रथम संस्करण, पृ0 संख्या– 198–237, 262–281।
6. त्रिपाठी, के0न0, (2018), उत्तराखण्डः एक समग्र अध्ययन, बौद्विक प्रकाशन, पृ0 संख्या– 79–94, 148–181, 258–265।
7. उनियाल, हे0, (2005), कुमाऊँ के प्रसिद्व मन्दिर, धार्मिक, सांस्कृतिक, एवं पुरातात्विक दृष्टि से, 'कुमाऊँ के प्रसिद्व मन्दिर', तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
8. चौहान, च0सि0, (2009), कुमाऊँ में कोट एवं सैन्य परम्परा मध्य हिमालय की सांस्कृतिक प्रथायें, मनीष प्रकाशन, अल्मोंड़ा, पृ0 संख्या– 41–59।
9. जोशी, दी0, (2011), अल्मोंड़ा एक परिचय, जनपद अल्मोंड़ा, पत्रिका, जिला सूचना कार्यालय एवं उत्तरायण कम्प्यूटर्स, चौघानपाटा, अल्मोंड़ा, पृ0 संख्या– 2–24।

10. जोशी, नि0, पाण्डे, शि0, (2010), अल्मोंड़ा और बौद्विक क्रिया कलाप, प्रयास पत्रिका, उत्तरायण कम्प्यूटर्स, अल्मोंड़ा, पृ0 संख्या– 23।
11. जोशी, म0प्र0, (2008), अल्मोंड़ा नगर एक ऐतिहासिक अध्ययन, 'उत्तराचंल हिमालय समाज, संस्कृति एवं पुरातत्व', अल्मोंड़ा बुक डिपो, अल्मोंड़ा, पृ0 संख्या– 211–231।
12. जोशी, सु0कु0, (2010), धार्मिक सांस्कृतिक व पर्यटन नगरी अल्मोड़ा, प्रयास पत्रिका, उत्तरायण कम्प्यूटर्स, अल्मोंड़ा, अंकः प्रथम, पृ0 संख्या– 14–20।
13. टम्टा, सं0 कु0, (2009), उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक धरोहरः ताम्र शिल्पकला, शैक्षिक संकल्प पत्रिका, पृ0 संख्या– 101–103।